Indian Streams Research Journal
Vol.2,Issue.I/ Feb; 12pp.1-4
मालू राम गुलास्तिया
ISSN:-2230-7850

Research Papers

कृष्ण भक्ति और सूरदास – एक विवेचना (सूर–काव्य में श्रीकृष्ण)

मालू राम गुलास्तिया
शोध छात्र – पी.एच.डी. (हिन्दी विभाग)
सिंघानिया विश्वविद्यालय (राजस्थान)

प्रस्तावना :–

कृष्ण भक्ति भावना होने के कारण मैंने आज तक एक वर्ष से भी ज्यादा ब्रज क्षेत्र में गुजारा है। ब्रज का कोई ऐसा गांव या शहर नहीं बचा जिसमें मैंने दिन–रात न गुजारे हों। मैंने वहां की धूप छॉव, आसमान, बादल, खुशबू, हवा, ब्रज रज, लता, पत्ता लता, बारिश, सर्दी–गर्मी, रस्म–रिवाजों को गहराई से अनुभव किया है। मैंने वहां साधना में हॅसकर – रोकर, गाकर खूब देखा है। इसी भक्ति भावना के साथ मेरा ध्यान सूरदास पर गया। सूरदास को कृष्ण भक्ति का ही नहीं हिन्दी भक्ति का जहाज कहा जाता है। इस कारण मैं बहुत अधिक पारसौली और गोवर्धन पर्वत पर स्थित श्रीनाथ के मन्दिर से जुडा क्यों कि ये दो स्थल ही प्रमुखतः सूरदास साधना स्थली रहे हैं।

मुझे खुशी है सिंघानिया विश्वविद्यालय – पचेरी बडी (राजस्थान) ने मुझे इस विषय पर शोध–प्रबन्ध लिखने की अनुमति प्रदान की है।

कृष्ण व्युत्पत्ति तथा अर्थ – एक मत के अनुसार 'कृष्ण' शब्द संस्कृत भाषा की 'कृष्' धातु में 'नक्' प्रत्यय जुड़कर बना है। 'कृष्' का अर्थ है – आकृष्ट करना। 'नक्' का अर्थ है – अच्छी प्रकार से। इस प्रकार 'कृष्ण' का शब्दार्थ हुआ अच्छी प्रकार से आकर्षित करना या करने वाला। एक दूसरे मत में, 'कृश्' धातु सत्तावाचक है और 'ण' प्रत्यय आनन्दवाचक है। अतएव सत्ता और आनन्द दोनों का एक्य भावरूप है – कृष्ण। शब्दकोश में इसका प्रयोग श्याम, गहरा नीला तथा वृक्ष–विशेष के नाम–रूप से लिया गया है। 'श्री' शब्द इसमें बाजार का ही नहीं 'ऐश्वर्ययुक्त, कल्याणमय तथा लक्ष्मी सहित अर्थात् विष्णुरूपी' होने का भी सूचक है।

कृष्ण–चरित्र की पृष्ठभूमि – संस्कृत साहित्य में 'कृष्ण' सम्बन्धी विवरण वैदिक काल से मिलने लगते हैं। ऋग्वेद में कृष्ण का उल्लेख दो रूपों में मिलता है – (१) कृष्ण आंगीरस (२) कृष्णासुर। छान्दोग्योपनिषद (३/१७/४–६) में कृष्ण को घोर आंगीरस ऋषि का शिष्य माना है। पहले द्यातक में वासुदेव कण्ह (कृष्ण) पुत्रशोक से दुःखी बताये गये हैं और दूसरे में वह कामासक्त होकर चाण्डाल–कन्या 'जाम्बवती' को अपनी रानी बनाते हैं। कृष्ण का सर्वाधिक, विस्तृत उल्लेख 'महाभारत' में उपलब्ध होता है। यहां पर कृष्ण द्वारिका–नरेश, प्रकाण्ड राजनीतिज्ञ बलवान योद्धा अर्जुन के आदर्श मित्र, महाभारत युद्ध के संचालक और गीता का उपदेश देने वाले व्यक्ति के रूप में चित्रित हैं। हरिवंशपुराण, वायुपुराण तथा वामनपुराण में भी कृष्ण– सम्बन्धी अनेक कथायें मिलती हैं। श्रीमद्भागवतपुराण में कृष्ण को भोगी और योगी – दोनों ही रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

ललित साहित्य में कृष्ण का सर्व प्रथम उल्लेख अश्वघोष के 'बुद्ध चरित्र' में मिलता है। गाथासप्तशती, वेणीसंहार, शिशुपालवध, यशस्यतिलक, चम्पू और प्राकृत में 'गउड़वहो' आदि अनेक रचनाओं में कृष्ण– सम्बन्धी विवरण है। इस समय तक कृष्ण को न तो कहीं भगवान मानकर पूजा गया है और न ही उनकी भक्तिभावना का कोई संकेत है। आलवार सन्तों द्वारा रचित 'गीतिकाव्य' पूर्णतः कृष्णभक्तिमूलक है।

हिन्दी जगत में कृष्ण को आलम्बन बनाकर मैथिल–कोकिल विद्यापति अपनी 'पदावली' की रचना आदि काल में ही कर चुके थे, किन्तु भक्ति–भाव का समावेश रामानन्द द्वारा ही किया गया। हिन्दी का कृश्ण–भक्ति काव्य, भक्तिकाल में, महाकवि सूरदास से प्रारम्भ होता है। सूरदास ने अपने 'सूरसागर' में कृष्ण के अधिकांश जीवन प्रधानतः बाल्यावस्था और युवावस्था – विस्तृत रूप से वर्णन किया है। एक ओर यदि उनके कृष्ण ब्रह्म के अंशावतार हैं, शिवादि आदि देवता उनका आदर करते हैं, बाल्यावस्था में ही कालिया दमन, बकासुर आदि भयंकर राक्षसों का संहार करके अपने 'ब्रह्मत्व' का परिचय देते हैं, तो दूसरी ओर, कभी गोपियों का चीरहरण होता है तो कभी गोपियां उनके विरह में यमुना की भॉति काली पड जाती हैं। तात्पर्य यह है कि सूरदास ने कृष्ण को वात्सल्य, सख्य और माधुर्य का आलम्बन बनाया है और बडे विस्तार के साथ उनकी प्रत्येक लीला का वर्णन किया है।

Indian Streams Research Journal
Vol.2,Issue.I/ Feb; 2012

सूर–कृष्णचरित्र : प्रेरक स्त्रोत – सर्वप्रथम, सूर कृष्ण–भक्तिशाखा के सर्वोत्तम कवि थे। दूसरे, वैयक्तिक रूप से भी वे कृष्ण के अटल भक्त थे। तीसरे, आध्यात्मिक दृष्टि से वे वल्लभ–सम्प्रदाय और पुष्टिमार्गीय भक्ति के समर्थक ही नहीं, निकट सम्पर्क में भी थे। चौथे, वे अष्टछापी अष्टसखाओं में से एक थे जिनका कार्य कृष्णविषयक पद बनाकर कृष्ण–चरित्र का अंकन करना या गायन करना था। पॉचवे, सूरकाव्य का सर्वाधिक प्रेरक स्त्रोत है – श्रीमद्भागवत, जो कृष्ण की ही जीवन गाथा है। छठे, सूर सगुण का साकार कृष्ण को मानते थे। सातवें, सूर हर प्रकार से उस ब्रज प्रदेश से सम्बन्धित थे जहॉ का एक एक कण कृष्ण और उनके क्रिया–कलापों का साकार क्रीडास्थल है। आठवें, सूर ने जिन कवियों से प्रभाव ग्रहण किये, वे पहले ही कृष्ण–चरित्र का गायन कर चुके थे। नवें, सूर के समय कृष्णाराधना का प्रचार–प्रसार जोरों पर था। दसवें, शास्त्रीय दृष्टि से कृष्ण कृष्ण–कथा के नायक थे।

सूर–काव्य में कृष्ण– यूं तो कृष्ण से सम्बन्धित सूर–कृत कई रचनायें बतायी जाती हैं तथा 'गोवर्धन लीला या सरस लीला', 'भ्रमरगीत', 'नागलीला', 'मानलीला', 'राधा–रस–केलि–कौतुहल' आदि किन्तु प्रामाणिक रचनायें तीन हैं – 'सूरसागर', 'सूर सारावली' तथा 'साहित्य लहरी'। इनमें से अन्तिम (अर्थात् 'साहित्य लहरी') दृष्टिकूट पदों और काव्यशास्त्रीय लक्षणों का ग्रन्थ है तो 'सारावली' में होली–रूपक के माध्यम से रासलीला आदि विविध कथायें कही गयी हैं। 'सूरसागर' तो कृष्ण की जीवनगाथा है ही। कहना न होगा कि इन सभी रचनाओं के सर्वप्रधान विषय (नायक) कृष्ण ही हैं और इनमें उन्हीं का चरितगायन विस्तारपूर्वक किया गया है।

उपर्युक्त सूरकाव्य में अंकित कृष्ण कथा और कृष्ण–चरित्र में कृष्ण मुख्यतः ४ रूपों में प्रकट हुए मिलते हैं – (१) बालक (२) रसिक (३) राधा–गोपी वल्लभ और (४) लोकनायक।

(१) बालकृष्ण – कृष्ण का यह रूप सर्वाधिक मात्रा में मिलता है – 'सूरसागर' में जहॉ कंस–कारागार में हुए कृष्ण–जन्म से इसका शुभारम्भ होता है। यशोदा सान्निधय से इसको इतना विस्तार मिलता है कि "बालक की कोई चेष्टा और उसका कोई भी रूप ऐसा नहीं, जिसे सूर ने अपनी लेखनी से न संवारा हो।" कृष्ण का सौन्दर्य, बाल–सुलभ चापल्य, क्रीड़ायें, तोतली–अटपटी वाणी, स्पर्धा, वाद–विवाद, शरारतें, आत्मगौरव, हठधर्मी, शिकायतें, खीझ, बालसुलभ क्रिया–कलाप आदि से लेकर गोचारण और दधिलीला तक कृष्ण का बालरूप मुखर किया गया है, एकदम सच्चे, स्वाभाविक और रसमय रूप में। इसी भॉति बालक कृष्ण के मथुरा–प्रवास और तत्सम्बन्धी नाना विघ्न बाधाओं, संकटों आदि की सम्भावना मातृ पर आधृत वियोगावस्था के नाना चित्र भी यहॉ उकेरे गये हैं। भागवत के पारब्रह्मावतार कृष्ण एकदम जन–सामान्य वर्ग के बालक बन गये हैं।

(२) रसिक – गोदोहन, गोचारण, चीरहरण, पनघट–लीला, दानलीला, मुरली–माधुर तथा रासादि प्रसंग इसी के प्रमाण हैं। ऐसे प्रसंगों में नटवर, नागर, मुरलीवादक, नृतक, कुशल नायक और लीलाधारी कृष्ण के नाना रसिकसूचक गुण मुखर हुये हैं। कृष्ण की मधुर मुस्कान हो या दुपट्टा ओढ़कर गोपियों (राधा) को फंसाना, मार्ग की छेड़छाड़ हो दधि–गो के बहाने प्रणय–निवेदन करना, नायकोचित बाह्र सौन्दर्य हो अथवा आन्तरिक गुणों का मुख्यतया पुरूषोचित गुणों का उद्घाटन, कहने को आध्यात्मिक होने पर भी एकदम सांसारिक और तत्कालीन ग्राम्य समाज के सहज–सरल रूप में उद्घटित होता है। यहॉ तक कि 'भ्रमरगीत' जैसे विरह–प्रसंगों में भी गोपियॉ कृष्ण के इसी रूप को स्थान स्थान पर उद्धृत करती हैं। 'साहित्य लहरी' में कृष्ण का यही रूप यदि काव्यशास्त्रीय आधार पर मुखर हुआ है तो 'सारावली' में आध्यात्मिक धरातल पर किन्तु समग्रतः यह रूप है एकदम भौतिक धरातल और कवियुगीन परिस्थितियों से प्रभावित–परिचालित।

(३) राधा–गोपी बल्लभ– किशोर कृष्ण का राधा या गोपी–सम्पर्क शीघ्र ही, युवावस्था तक आते आते, कृष्ण को राधा (गोपी) बल्लभ बना देता है। यद्यपि 'सूरसागर' में राधा–कृष्ण परिचय का भी स्पष्ट उल्लेख है जो राधा की स्वकीया बनाता है और तो कृष्ण को राधा बल्लभ। राधा–कृष्ण–मिलन, नाना लीलायें, मिलन–विनोद, दाम्पत्य जीवन, मानादि, वियोग आदि विविध प्रसंग इसी के प्रमाण हैं जिनका पर्य्यवसान द्वारिका में राधा–माधव भेंट पर होता है।

(४) लोकनायक– मूलतः सूर के कृष्ण ब्रह्मावतार हैं जिनका अवतरण भू–भार हटाने और कंसादि का संहार करने हेतु हुआ है। वत्सासुर, अधासुर, पूतना–वध, गोवर्धन धारण, तृणवृत्त से लेकर कंस–वध तक के नाना कार्य कृष्ण के इसी लोक–नायकत्व के सूचक हैं। अपने इस रूप में कृष्ण शक्तिशाली योद्धा, अजेय नायक, उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ, महान् कर्त्तव्यपरायण और देश–जाति–उद्धारक आदि न जाने कितने गुणों से युक्त हैं। अभाव वैयक्तिक (यथा पूतना–वध) हो अथवा सामाजिक (यथा बकासुर, वत्सासुर, अधासुर, धेनुकासुरादि का वध, कालिया दमन, गोवर्धन धारण) कृष्ण दोनों का विरोध ही नहीं यथाशक्ति समाप्ति भी करते हैं। इसी भॉति अत्याचारी, अन्यायी कंस का वध, यमलार्जुन–उद्धार आदि उनके अत्याचार–अन्याय–विरोधी होने के सूचक हैं। जरासन्ध–वध, द्वारिका में नव–राज्य की स्थापना, रुकमणि विवाह, कालयवन–वध, शिशुपाल–वध, आदि भी इसी वर्ग के कुछ प्रसंग हैं। कृष्ण के दीनबन्धु–रूप का, कुब्जा (कंस की दासी) तथा सुदामा (कृष्ण का बाल सखा) विषयक प्रसंग इसीके कुछ प्रमाण हैं।

उपसंहार – सूर–कृत कृष्ण–चरित्र निःसंदेह नाना पुराणों, पूर्ववर्ती कृष्ण–साहित्य तथा मुख्यतः श्रीमद्भागवत आदि से प्रभावित–परिचालित है। फिर भी "उनका कृतित्व कृष्ण चरित्र को अनुदित करने में नहीं अपितु नूतन सन्दर्भों की उद्भावना कर उसे नयी परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में है।" कृष्ण–चरित्र को इतने विशाल कैनवास पर, जीवन को विविध सनातन भाव–भूमियों पर और इतने अधिक व्यापक–सरल रूप में अन्य कोई भी कवि अंकित नहीं कर पाया है। कृष्ण का सामान्य ग्राम्य रूप, आलवार भक्तों का बालरूप, जयदेव, चंडीदास और विद्यापति आदि का नायकत्व तथा श्रृंगारिक रसिक रूप तथा साम्प्रदायिकता से परे आध्यात्मिक–दार्शनिक रूप एक साथ समन्वित हैं। सच तो यह है कि "सूर ने कृष्ण–चरित्र को एक नया मोड देकर, मानव के अति निकट लाकर, उसे हर व्यक्ति के मानस को छूने वाला बना दिया है। सूर–भक्ति की इस शाखा ने हिन्दी साहित्य को एक नयी दृष्टि और नया चिन्तन दिया है।"